ज़हर का तोड़

मूसा और पीतल का सँप

zahr ka toṛ. mūsā aur pītal ka sāṅp

The Antidote. Moses and the Bronze Snake

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 11*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.
published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther
https://www.freebibleimages.org/illustrations/rg-moses-snake/

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

तौरेत, गिनती 21:4-9 7

मिसर से निकलकर इसराईलियों के लिए ईमान का सफ़र शुरू हुआ। वह सीना पहाड़ पर पहुँच गए जहाँ उन्हें ख़ुदा की राह बताई गई। वहाँ उन्हें सीखना पड़ा कि ख़ुदा वफ़ादारी चाहता है। इसके बाद वह रेगिस्तान में घूमते रहे। इतने घूमते रहे कि बेसब्र हो गए। तब वह ख़ुदा और मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने लगे,

> आप हमें मिसर से निकालकर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क़िस्म की ख़ुराक से घिन आती है।

तब रब ने उनके दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए जिनके काटने से बहुत-से लोग मर गए।

फिर वह मूसा के पास आए। उन्होंने कहा,

> हमने रब और आपके ख़िलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हमसे साँप दूर कर दे।

मूसा ने उनके लिए दुआ की तो ख़ुदा ने फ़रमाया,

> एक साँप बनाकर उसे खंबे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच जाएगा।

इस पर मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और खंबा खड़ा करके साँप को उससे लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच गया।

सदियों बाद ईसा मसीह ने इस वाक़िये का ज़िक्र करके फ़रमाया,

> जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए। (इंजील, यूहन्ना 3:14-15)

► **इब्ने-आदम कौन था?**

ईसा मसीह इब्ने-आदम था।

► **क्या ज़रूर था?**

ज़रूर था कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।

► **ईसा मसीह को किस तरह ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा?**

उसे सलीब पर चढ़ाया जाएगा।

► **क्या ईसा मसीह इस सलीबी मौत से बचना चाहता था?**

नहीं। उसने ख़ुद फ़रमाया कि ज़रूर है कि इब्ने-आदम को चढ़ाया जाए।

► **यह क्यों ज़रूर था?**

यह इसलिए ज़रूर था कि हर एक जो उस पर ईमान लाए अबदी ज़िंदगी मिल जाए।

► **ईसा मसीह किस तरह खंबे पर लटके साँप की मानिंद है?**

जिस इसराईली ने रेगिस्तान में खंबे पर लटके साँप पर नज़र गड़ाए रखी वह साँपों के ज़हर से बच गया। ईसा मसीह को भी खंबे पर लटकाया गया। जो ईसा मसीह पर नज़र गड़ाए रखता है वह गुनाह के ज़हर से बचकर अबदी ज़िंदगी पाता है।

► **इनसान को ईसा मसीह पर नज़र गड़ाए रखने से किस तरह अबदी ज़िंदगी मिल जाती है?**

अपनी सलीबी मौत से ईसा मसीह ने हमारी ख़ातिर अपनी जान दी। जो सज़ा हमें मिलनी थी वह उसने बरदाश्त की। अब जो उस पर नज़र गड़ाए रखे उसका ख़ुदा से रिश्ता बँध जाता है, वह ख़ुदा के

ख़ानदान का फ़रद बन जाता है। तब उसके गुनाहों को माफ़ किया जाता है, और वह अबदी ज़िंदगी पाता है।

► **क्या रेगिस्तान में तमाम इसराईली साँपों से बच गए?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

सिर्फ़ वह बच गए जिन्होंने साँप पर नज़र की।

► **क्या सबको ईसा मसीह से नजात मिलती है?**

नहीं। सिर्फ़ वह बचकर अबदी ज़िंदगी पाते हैं जो ईसा मसीह पर नज़र गड़ाए रखते हैं।

► **क्या आप गुनाह के ज़हर से बच गए हैं? क्या आप ख़ुदा के ख़ानदान के फ़रद बन गए हैं? क्या आपको अबदी ज़िंदगी हासिल है?**

तौरेत, गिनती 21:4-9

होर पहाड़ से रवाना होकर वह बहरे-क़ुलज़ुम की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसब्र हो गए। वह रब और मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने लगे, “आप हमें मिसर से निकालकर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क़िस्म की ख़ुराक से घिन आती है।”

तब रब ने उनके दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए जिनके काटने से बहुत-से लोग मर गए। फिर लोग मूसा के पास आए। उन्होंने कहा, “हमने रब और आपके ख़िलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हमसे साँप दूर कर दे।”

मूसा ने उनके लिए दुआ की तो रब ने मूसा से कहा, “एक साँप बनाकर उसे खंबे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच जाएगा।” चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और खंबा खड़ा करके साँप को उससे लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच गया।